**EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045**
**Volume 15, Issue 2, July-December, 2026, Available online at: www.eduzonejournal.com**

# गुटनिरपेक्षता और विकासशील विश्व के नेतृत्व में भारत की भूमिकाः एक अध्ययन

**संदीप कुमार लौरा**

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, मानविकी संकाय, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा - 124021

## सार

गुटनिरपेक्षता भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण आधार रही है, जिसने शीत युद्ध के दौर में भारत को दोनों महाशक्तियों–संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के सैन्य गुटों से दूर रहकर स्वतंत्र एवं संतुलित विदेश नीति अपनाने का अवसर प्रदान किया। गुटनिरपेक्ष आंदोलन का उद्देश्य केवल किसी सैन्य गुट में शामिल न होना नहीं था, बल्कि विश्व शांति, उपनिवेशवाद का विरोध, नस्लभेद का उन्मूलन, निरस्त्रीकरण, संप्रभु समानता तथा विकासशील देशों के राजनीतिक एवं आर्थिक हितों की रक्षा करना भी था।
भारत ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में इस आंदोलन की स्थापना एवं विकास में अग्रणी भूमिका निभाई और एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका के नवस्वतंत्र देशों को एक साझा मंच प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रस्तुत शोध–पत्र में गुटनिरपेक्षता की अवधारणा, उसके ऐतिहासिक विकास, भारत की विदेश नीति में उसकी भूमिका तथा विकासशील विश्व के नेतृत्व में भारत के योगदान का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, गुटनिरपेक्ष आंदोलन की प्रमुख उपलब्धियों, सीमाओं और वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का भी मूल्यांकन किया गया है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शीत युद्ध की समाप्ति के बावजूद बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, वैश्विक आर्थिक असमानता, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद तथा सामरिक प्रतिस्पर्धा जैसी समकालीन चुनौतियों के संदर्भ में गुटनिरपेक्षता के मूल सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता, बहुपक्षीय सहयोग तथा वैश्विक दक्षिण के नेतृत्व के माध्यम से इस विचारधारा को नए स्वरूप में आगे बढ़ा रहा है। अतः गुटनिरपेक्षता भारत की विदेश नीति का केवल ऐतिहासिक सिद्धांत नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की वैश्विक कूटनीति का भी एक महत्वपूर्ण आधार है

**मुख्य शब्दः गुटनिरपेक्षता, गुटनिरपेक्ष आंदोलन, भारत, विकासशील विश्व, विदेश नीति, विश्व शांति, वैश्विक दक्षिण, रणनीतिक स्वायत्तता।**

## भूमिका

गुटनिरपेक्षता भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जिसका विकास द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शीत युद्ध की परिस्थितियों में हुआ। उस समय विश्व दो महाशक्तियों–संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के नेतृत्व वाले विरोधी सैन्य गुटों में विभाजित था। नवस्वतंत्र देशों के समक्ष यह चुनौती थी कि वे अपनी राष्ट्रीय संप्रभुता और स्वतंत्र विदेश नीति को बनाए रखते हुए किसी भी शक्ति गुट का हिस्सा बने बिना अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करें। इसी आवश्यकता के परिणामस्वरूप गुटनिरपेक्षता की अवधारणा विकसित हुई।

भारत ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में गुटनिरपेक्ष नीति को अपनाया। इसका उद्देश्य किसी गुट का विरोध करना नहीं, बल्कि स्वतंत्र विदेश नीति, विश्व शांति, उपनिवेशवाद के विरोध, नस्लभेद के उन्मूलन तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना था। वर्ष 1961 में बेलग्रेड सम्मेलन के माध्यम से गुटनिरपेक्ष आंदोलन की औपचारिक स्थापना हुई, जिसमें भारत ने संस्थापक सदस्य के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन के माध्यम से एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के विकासशील देशों की समस्याओं और आकांक्षाओं को वैश्विक मंच पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। उपनिवेशवाद का विरोध, निरस्त्रीकरण, नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था तथा विकासशील देशों के अधिकारों की रक्षा जैसे मुद्दों पर भारत ने नेतृत्वकारी भूमिका निभाई। वर्तमान समय में, यद्यपि शीत युद्ध समाप्त हो चुका है, फिर भी रणनीतिक स्वायत्तता, बहुपक्षवाद और ''वैश्विक दक्षिण'' के हितों की रक्षा के संदर्भ में गुटनिरपेक्षता की भावना भारत की विदेश नीति में आज भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। प्रस्तुत शोध–पत्र में इन सभी पहलुओं का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

## गुटनिरपेक्षता की अवधारणा एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

गुटनिरपेक्षता आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसका विकास द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात शीत युद्ध की परिस्थितियों में हुआ। शीत युद्ध के दौरान विश्व दो प्रमुख शक्ति गुटों– संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व वाले पश्चिमी गुट तथा सोवियत संघ के नेतृत्व वाले साम्यवादी गुट–में विभाजित हो गया था। ऐसे समय में नवस्वतंत्र देशों के समक्ष यह चुनौती थी कि वे किसी भी सैन्य या वैचारिक गुट में शामिल हुए बिना अपनी राष्ट्रीय संप्रभुता, स्वतंत्र विदेश नीति तथा विकास के लक्ष्यों की रक्षा करें। इसी आवश्यकता से गुटनिरपेक्षता की अवधारणा का जन्म हुआ।

गुटनिरपेक्षता का अर्थ किसी अंतरराष्ट्रीय समस्या से तटस्थ रहना नहीं है, बल्कि प्रत्येक मुद्दे पर स्वतंत्र एवं राष्ट्रीय हितों के अनुरूप निर्णय लेना है। इसका मूल उद्देश्य विश्व शांति, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व, उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद का विरोध, नस्लभेद का उन्मूलन, निरस्त्रीकरण तथा विकासशील देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना था। इस नीति के माध्यम से नवस्वतंत्र राष्ट्र अपनी विदेश नीति को महाशक्तियों के दबाव से मुक्त रखते हुए स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम हुए।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि वर्ष 1955 के बांडुंग सम्मेलन से तैयार हुई, जिसमें एशिया और अफ्रीका के 29 देशों ने भाग लेकर उपनिवेशवाद, नस्लभेद और सैन्य गुटबंदी का विरोध किया। इसके बाद वर्ष 1961 में यूगोस्लाविया की राजधानी बेलग्रेड में प्रथम गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ, जहाँ भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, यूगोस्लाविया के जोसिप ब्रोज टीटो, मिस्र के गमाल अब्देल नासिर, इंडोनेशिया के सुकर्णो तथा घाना के क्वामे नक्रूमा ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन की औपचारिक स्थापना की।
भारत ने गुटनिरपेक्षता को अपनी विदेश नीति का आधार बनाते हुए विकासशील देशों के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक हितों की रक्षा के लिए सक्रिय नेतृत्व प्रदान किया। इस प्रकार गुटनिरपेक्षता केवल शीत युद्ध की रणनीति नहीं, बल्कि स्वतंत्र विदेश नीति, रणनीतिक स्वायत्तता और विश्व शांति पर आधारित एक व्यापक अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण के रूप में विकसित हुई।

## गुटनिरपेक्ष आंदोलन में भारत की भूमिका एवं विकासशील विश्व के नेतृत्व में भारत का योगदान

गुटनिरपेक्ष आंदोलन के निर्माण, विकास तथा विस्तार में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने यह स्पष्ट किया कि भारत किसी भी सैन्य गुट का सदस्य नहीं बनेगा, बल्कि राष्ट्रीय हितों, विश्व शांति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के आधार पर अपनी विदेश नीति संचालित करेगा। भारत की यही नीति आगे चलकर गुटनिरपेक्ष आंदोलन की आधारशिला बनी। नेहरू ने यूगोस्लाविया के जोसिप ब्रोज टीटो, मिस्र के गमाल अब्देल नासिर, इंडोनेशिया के सुकर्णो तथा घाना के क्वामे नक्रूमा जैसे नेताओं के साथ मिलकर 1961 में बेलग्रेड में आयोजित प्रथम गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस सम्मेलन ने विकासशील देशों को एक साझा मंच प्रदान किया, जहाँ वे अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक विकास तथा संप्रभुता की रक्षा के लिए सामूहिक रूप से कार्य कर सके।

भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन को केवल शीत युद्ध की गुटबंदी से दूर रहने का माध्यम नहीं माना, बल्कि इसे विश्व शांति, उपनिवेशवाद के विरोध, नस्लभेद के उन्मूलन तथा अंतरराष्ट्रीय न्याय को बढ़ावा देने के प्रभावी मंच के रूप में विकसित किया। भारत ने एशिया और अफ्रीका के स्वतंत्रता आंदोलनों का निरंतर समर्थन किया तथा दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विरोध किया। इसके अतिरिक्त भारत ने

संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से परमाणु निरस्त्रीकरण, हथियारों की होड़ को रोकने तथा विवादों के शांतिपूर्ण समाधान की वकालत की।

विकासशील विश्व के नेतृत्व में भारत का योगदान बहुआयामी रहा है। भारत ने नवस्वतंत्र देशों की आर्थिक समस्याओं, गरीबी, तकनीकी पिछड़ेपन और असमान वैश्विक आर्थिक व्यवस्था जैसे मुद्दों को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रमुखता से उठाया। भारत ने नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना का समर्थन किया ताकि विकासशील देशों को वैश्विक व्यापार, वित्त और प्रौद्योगिकी में समान अवसर प्राप्त हो सकें। भारत ने दक्षिण–दक्षिण सहयोग को भी प्रोत्साहित किया, जिसके माध्यम से विकासशील देशों के बीच तकनीकी, आर्थिक और शैक्षिक सहयोग को बढ़ावा मिला।

समय के साथ भारत ने विकासशील देशों के लिए क्षमता निर्माण, तकनीकी सहयोग, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि तथा डिजिटल विकास के क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग कार्यक्रम के माध्यम से अनेक एशियाई, अफ्रीकी तथा लैटिन अमेरिकी देशों के अधिकारियों और विशेषज्ञों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। भारत ने विभिन्न देशों को छात्रवृत्तियाँ, तकनीकी सहायता और विकास परियोजनाओं के माध्यम से भी सहयोग दिया, जिससे उसकी विश्वसनीयता और नेतृत्व क्षमता में वृद्धि हुई।

इक्कीसवीं सदी में भारत ने ''वैश्विक दक्षिण'' की आवाज को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षा, स्वास्थ्य सहयोग तथा बहुपक्षीय संस्थाओं में सुधार जैसे विषयों पर भारत ने विकासशील देशों के साझा हितों का समर्थन किया है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, आपदा–रोधी अवसंरचना गठबंधन तथा वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ बढ़ते आर्थिक और तकनीकी सहयोग भारत की नेतृत्वकारी भूमिका को और सुदृढ़ करते हैं।

यद्यपि शीत युद्ध समाप्त हो चुका है, फिर भी भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता की मूल भावना आज ''रणनीतिक स्वायत्तता'' के रूप में दिखाई देती है। भारत विभिन्न वैश्विक शक्तियों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखते हुए अपने राष्ट्रीय हितों और विकासशील देशों के हितों की समान रूप से रक्षा करने का प्रयास करता है। इस प्रकार भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन को केवल एक ऐतिहासिक अवधारणा तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समकालीन वैश्विक राजनीति में विकासशील विश्व के नेतृत्व और सहयोग के प्रभावी माध्यम के रूप में नई दिशा प्रदान की है।

## गुटनिरपेक्ष आंदोलन की उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ एवं समकालीन प्रासंगिकता

### गुटनिरपेक्ष आंदोलन की उपलब्धियाँ

गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने शीत युद्ध के दौर में अंतरराष्ट्रीय राजनीति को संतुलित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि इसने एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के नवस्वतंत्र देशों को एक साझा मंच प्रदान किया, जहाँ वे अपनी संप्रभुता, स्वतंत्रता और राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए एकजुट हो सके। इस आंदोलन ने उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और नस्लभेद के विरुद्ध वैश्विक जनमत तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद रोध तथा नामीबिया, जिम्बाब्वे और अन्य देशों की स्वतंत्रता के समर्थन में गुटनिरपेक्ष देशों की भूमिका उल्लेखनीय रही।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने विश्व शांति, परमाणु निरस्त्रीकरण और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान का निरंतर समर्थन किया। इसके अतिरिक्त इसने विकासशील देशों के आर्थिक अधिकारों की रक्षा के लिए नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की मांग को वैश्विक स्तर पर प्रमुखता से उठाया। संयुक्त राष्ट्र संघ में विकासशील देशों की आवाज को सशक्त बनाने तथा दक्षिण–दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देने में भी इस आंदोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

### गुटनिरपेक्ष आंदोलन की चुनौतियाँ

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद गुटनिरपेक्ष आंदोलन के समक्ष अनेक नई चुनौतियाँ उत्पन्न हुईं। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात विश्व व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन आया, जिससे आंदोलन के मूल उद्देश्य की प्रासंगिकता पर प्रश्न उठने लगे। सदस्य देशों के राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक हितों में बढ़ती विविधता

के कारण आंदोलन की एकजुटता कमजोर हुई। कई सदस्य देशों ने अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार महाशक्तियों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित कर लिए, जिससे गुटनिरपेक्षता की मूल भावना प्रभावित हुई।

इसके अतिरिक्त वैश्वीकरण, आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा, ऊर्जा संकट, आर्थिक असमानता और क्षेत्रीय संघर्ष जैसी नई चुनौतियों ने आंदोलन के सामने नई प्राथमिकताएँ प्रस्तुत की हैं। संगठनात्मक स्तर पर भी गुटनिरपेक्ष आंदोलन के पास प्रभावी निर्णय–प्रवर्तन तंत्र का अभाव रहा है, जिसके कारण कई बार इसके निर्णय केवल घोषणाओं तक ही सीमित रह जाते हैं।

## समकालीन प्रासंगिकता

यद्यपि शीत युद्ध समाप्त हो चुका है, फिर भी गुटनिरपेक्षता के मूल सिद्धांत आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। वर्तमान विश्व बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है, जहाँ विभिन्न शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा पुनः तेज हो रही है। ऐसी स्थिति में रणनीतिक स्वायत्तता, स्वतंत्र विदेश नीति और संतुलित कूटनीति का महत्व पहले से अधिक बढ़ गया है।

भारत आज भी गुटनिरपेक्षता की मूल भावना को ''रणनीतिक स्वायत्तता'' के रूप में अपनाए हुए है। भारत अमेरिका, रूस, यूरोप, जापान तथा अन्य देशों के साथ अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर संबंध विकसित करता है और किसी एक शक्ति गुट पर निर्भर नहीं रहता। साथ ही, भारत ''वैश्विक दक्षिण'' के देशों की आवाज को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर रहा है। जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, स्वास्थ्य सहयोग तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार जैसे विषयों पर भारत विकासशील देशों के साझा हितों का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

इस प्रकार गुटनिरपेक्ष आंदोलन आज केवल शीत युद्ध की विरासत नहीं है, बल्कि विश्व शांति, समानता, बहुपक्षवाद और विकासशील देशों के सहयोग की एक महत्वपूर्ण विचारधारा के रूप में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि सदस्य देश बदलती चुनौतियों के अनुरूप अपने सहयोग और सामूहिक नेतृत्व को कितना प्रभावी बना पाते हैं।

## निष्कर्ष

गुटनिरपेक्षता भारत की विदेश नीति का एक ऐसा मूल सिद्धांत रही है जिसने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत को अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक विशिष्ट और सम्मानजनक पहचान प्रदान की। शीत युद्ध के दौर में भारत ने किसी भी शक्ति गुट का अनुसरण करने के बजाय स्वतंत्र, संतुलित और राष्ट्रीय हितों पर आधारित विदेश नीति अपनाई। गुटनिरपेक्ष आंदोलन के माध्यम से भारत ने उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, नस्लभेद तथा परमाणु हथियारों की होड़ का विरोध करते हुए विश्व शांति, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का निरंतर समर्थन किया। साथ ही, भारत ने एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के नवस्वतंत्र देशों के राजनीतिक एवं आर्थिक अधिकारों की रक्षा में नेतृत्वकारी भूमिका निभाई।

यद्यपि शीत युद्ध की समाप्ति के बाद अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हुए हैं, फिर भी गुटनिरपेक्षता के मूल सिद्धांत आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं। वर्तमान समय में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक आर्थिक असमानता, ऊर्जा एवं खाद्य सुरक्षा, आतंकवाद तथा तकनीकी प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियाँ विकासशील देशों के समक्ष नई परिस्थितियाँ उत्पन्न कर रही हैं। ऐसे समय में भारत ''रणनीतिक स्वायत्तता'' की नीति अपनाते हुए अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के साथ–साथ वैश्विक दक्षिण के देशों की आवाज को भी प्रभावी रूप से विश्व मंच पर प्रस्तुत कर रहा है।

अतः यह कहा जा सकता है कि गुटनिरपेक्षता केवल शीत युद्ध की ऐतिहासिक नीति नहीं, बल्कि भारत की स्वतंत्र विदेश नीति, बहुपक्षीय सहयोग, वैश्विक न्याय तथा विकासशील विश्व के नेतृत्व का आधार रही है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में भी इसके मूल मूल्य – स्वतंत्र निर्णय, संप्रभु समानता, विश्व शांति और सहयोग – भारत की विदेश नीति को दिशा प्रदान करते रहेंगे तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में इसकी प्रासंगिकता भविष्य में भी बनी रहेगी।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अवस्थी, ए. पी. (2018). भारत की विदेश नीति। आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन।
2. महाजन, वी. डी. (2022). अंतरराष्ट्रीय संबंध एवं राजनीति। नई दिल्लीः एस. चन्द एंड कम्पनी।
3. शर्मा, उर्मिला एवं शर्मा, एस. के. (2021). अंतरराष्ट्रीय राजनीति। आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन।
4. पंत, पुष्पेश एवं जैन, श्रीपाल. (2020). अंतरराष्ट्रीय संबंध। नई दिल्लीः मैकग्रा हिल एजुकेशन।
5. राजन, एम. एस. (1993). गुटनिरपेक्षता और गुटनिरपेक्ष आंदोलन। नई दिल्लीः कोणार्क पब्लिशर्स।
6. दत्त, वी. पी. (2016). भारत की विदेश नीति। नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस।
7. गोपाल, सर्वपल्ली. (1984). जवाहरलाल नेहरू : एक जीवनी। नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. नेहरू, जवाहरलाल. (1958). भारत की विदेश नीति : चयनित भाषण। नई दिल्लीः प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
9. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। वार्षिक प्रतिवेदन (विभिन्न वर्ष)। नई दिल्लीः विदेश मंत्रालय।
10. भारत सरकार. (विभिन्न वर्ष). भारत और गुटनिरपेक्ष आंदोलन से संबंधित आधिकारिक दस्तावेज। नई दिल्ली : विदेश मंत्रालय।
11. संयुक्त राष्ट्र संघ. (1945). संयुक्त राष्ट्र चार्टर। न्यूयॉर्कः संयुक्त राष्ट्र।
12. गुटनिरपेक्ष आंदोलन. (1961). बेलग्रेड घोषणा (ठमसहतंकम क्मबसंतंजपवद)। बेलग्रेड।